(25)

December 2005

Sub - C-6 Gender School & Society

8 thu

Topic :- Gender Role in Society through culture)

(संस्कृति द्वारा समाज में लिंग भूमिका)

समाज और समाजीकरण की प्रक्रिया में संस्कृति की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। संस्कृति का तात्पर्य है - नवीन सृजन, संवर्धन तथा व्यवहार के प्रतिमान का विकास। संस्कृति के कारण घर तथा समाज में लिंग-भूमिकाओं में परिवर्तन आ जाता है।

परिभाषायें :-

9 fri

टायलर के अनुसार :- "संस्कृति एक जटिल सम्पूर्ण है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा ऐसी ही अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश होता है जिन्हें मानव समाज के सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।"

लिण्टन :- "संस्कृति एक समुदाय के लोगों का सम्पूर्ण ज्ञान, दृष्टिकोण और आदतन व्यवहार होती है।"

संस्कृति की विशेषतायें :- (i) संस्कृति सामाजिक वस्तु है, व्यक्तिगत नहीं

(ii) संस्कृति का हस्तान्तरण तथा विकास होता है।

10 sat

(iii) संस्कृति मानव समाजों में पायी जाती है।

11 sun

(iv) संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूरक है।

(v) संस्कृति व्यक्तित्व विकास तथा समाजीकरण में सहायक होती है।

चुनौतीपूर्ण लिंग की शिक्षा में संस्कृति की भूमिका :-

(i) चरित्र-निर्माण तथा नैतिकता

(ii) गतिशीलता

(iii) नमनीयता तथा उदारता की शिक्षा

(iv) सहिष्णुता

(v) स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्यों का विकास

(vi) सामाजिक नियन्त्रण

(vii) नेतृत्व की क्षमता का विकास

(viii) राष्ट्रीय एकता का भाव

January 2006

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

Notes

P.T.O

Scanned with CamScanner

चरित्र-निर्माण तथा नैतिकता :- संस्कृति द्वारा चरित्र-निर्माण तथा नैतिकता के विकास का कार्य सम्पादित किया जाता है ऐसा समाज जहां चरित्र तथा नैतिकता से परिपूर्ण व्यक्ति हो तो लैंगिक भेदभावों में काफी कमी आ जायगी।

गतिशीलता :- समाज में संस्कृति का गतिशील होना अत्यंत आवश्यक है। गतिशील संस्कृति बहते हुये जल की तरह हमेशा स्वच्छ तथा निर्मल होती है।

नमनीयता तथा उदारता की शिक्षा :- संस्कृति में नमनीयता तथा उदारता होनी चाहिए। इन

अच्छे तत्वों को ग्रहण कर लिंगीय सुदृढ़ीकरण में तीव्रता लाने का कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

सहिष्णुता :- संस्कृति को अन्य संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता का भाव रखना होगा, जिससे लिंग की समानता हेतु सकारात्मक कार्य किये जा सके। अन्य संस्कृति से सीख लेकर अपनी धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक उन्नति कर सकते है।

स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्यों का विकास :- भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्व प्रेम, सहयोग,

दया, परोपकार, करूणा, अतिथिदेवोभव, स्त्रियों का सम्मान, सादा जीवन उच्च विचार की संस्कृति है। इन सांस्कृतिक मूल्यों में ह्रास के कारण वर्तमान में स्त्रियों को भोग की सामग्री माना जाने लगा है जिससे प्रत्येक क्षेत्र में उनकी स्थिति दयनीय हो गयी है। अतः लैंगिक समानता हेतु स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना होगा, समावेश करना होगा।

सामाजिक नियंत्रण :- संस्कृति सामाजिक नियन्त्रण का कार्य करती है। परन्तु सांस्कृतिक दोषों के कारण यह नियंत्रण पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर अधिक होता है तथा प्रभावी तरीके से लागू किया जाता है। स्त्रियों को घर की चाहरदीवारी तक सीमित रखना, कन्याओं की भ्रूण में तथा जन्म के पश्चात हत्या करके, बालिकाओं के साथ उपेक्षा स्वभाव पर नियंत्रण कर लिंगीय भेदभावों में कमी लाया जा सकता है।

—x—

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

Notes

(26) Sub:- Gender School & Society C-6

December 2005

22 thu

Topic - Gender Issues in Curriculum
(पाठ्यक्रम में जेण्डर मुद्दे)

पाठ्यक्रम का स्थान शिक्षा में महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है और यह अपने उद्देश्यों की पूर्ति पाठ्यक्रम के द्वारा करती है। पाठ्यक्रम का संबंध बालक के ज्ञानात्मक पक्ष के विकास से होता है। इसके अनुसार ही पाठ्य-पुस्तकों का चयन किया जाता है। पाठ्यक्रम शिक्षण की पाठ्य-सामग्री का निर्धारण करता है।

23 fri

कुछ परिभाषायें :-

मुनरो :- "पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित हैं, जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उपयोग में लाया जाता है।"

फ्रोबेल :- "पाठ्यचर्या को मानव जाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिये।"

कनिंघम :- "पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथ में एक साधन है, जिससे वह अपने विद्यालय में, अपने उद्देश्यों के अनुसार अपने छात्रों को कोई भी रूप दे सकता है।"

24 sat

अतः हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षा व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। यह अध्ययन का निश्चित एवं तर्कपूर्ण क्रम है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह नवीन ज्ञान एवं अनुभव को ग्रहण करता है।

पाठ्यक्रम (Curriculum) तथा पाठ्यचर्या (Syllabus) में अंतर :-

(i) Curriculum से पता चलता है कि विद्यार्थी को किस आयु में कितने अनुशासन के साथ शिक्षा लेनी है वहीं Syllabus में विद्यार्थी को बताया जाता है कि उन्हें किस विषय की जानकारी किस कक्षा में प्राप्त होगी।

(ii) पाठ्यक्रम में शिक्षा केवल लिखित में नहीं दी जाती है, बल्कि कुछ अनुशासन, नैतिकता आदि

Notes

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

January 2006

Scanned with CamScanner

26 mon भी सिखाई जाती है जबकि Syllabus में आपको किताबों का ज्ञान और कई विषयों की जानकारी दी जाती है।

(iii) पाठ्यक्रम में प्रयोग तथा शोध पर ध्यान दिया जाता है जबकि Syllabus में उन्हें किताबों द्वारा कैसे अच्छे से ज्ञान दिया जा सकता है, इस पर ध्यान दिया जाता है।

पाठ्यक्रम के निर्माण में निम्नलिखित लैंगिक बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है :—

(i) पाठ्यक्रम छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

27 tue (ii) पाठ्य सहगामी क्रियाओं हेतु पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण है।

(iii) पाठ्यक्रम के बिना औपचारिक शिक्षा संभव नहीं है।

(iv) शिक्षा के उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण है।

(v) पाठ्यक्रम अनुशासन तथा विद्यालयी वातावरण के समुचित संचालन के लिये आवश्यक है।

(vi) पाठ्यक्रम के द्वारा सामाजिक रूढ़िवादियों को समाप्त करने तथा जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है।

(vii) पाठ्यक्रम के द्वारा लैंगिक मुद्दों पर प्रत्यक्ष तथा

28 wed अप्रत्यक्ष रूप से जागरूकता लाने का कार्य किया जाता है।

(viii) शिक्षक तथा छात्रों के मार्गदर्शन तथा जुड़ाव के लिये पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण है।

(ix) पाठ्यक्रम होने से निश्चित समय में निश्चित ज्ञान प्रदान किया जाता है।

(x) पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र सामाजिक गतिविधियों से जुड़ता है।

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय इस बात पर बल देना चाहिए कि छात्रों का उससे विकास हो। छात्रों के हर क्षेत्र का विकास होना चाहिये। उनके शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों का विकास पाठ्यक्रम के माध्यम से किया जाता है।

November 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

Notes

Scanned with CamScanner

(27) Sub. - C-6 Gender School & Society

Topic :- Curriculum & the Gender Question
(पाठ्यक्रम और जेण्डर सवाल)

सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका महत्व तथा आवश्यकता बालकों के सर्वांगीण विकास, आदर्श नागरिकता का विकास, सभ्य समाज और असमानताओं की समाप्ति में अत्यधिक है। पाठ्यक्रम की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है :—

(i) पाठ्यक्रम शिक्षण-अधिगम को प्रभावी बनाने में सहायक है।
(ii) पाठ्यक्रम छात्रों को विषय सम्बन्धी एक स्पष्ट लक्ष्य प्रदान करता है।
(iii) पाठ्यक्रम शिक्षा को श्रृंखलाबद्ध तथा सुचारु रूप से गतिमान रखने के लिए आवश्यक है।
(iv) पाठ्यक्रम शिक्षक तथा छात्रों को एक निश्चित समय-सीमा का बोध कराता है।
(v) पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षक तथा छात्र दोनों का शैक्षिक उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो सकता है।
(vi) पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण की पूर्वयोजना को विकसित कर सकता है।

पाठ्यक्रम का चुनौतीपूर्ण लिंग की असमानता और उनकी सशक्त भूमिका के प्रस्तुतीकरण हेतु भूमिका निम्न प्रकार है:-

(i) पाठ्यक्रम बिना किसी लैंगिक भेदभाव के सबकी समानता के सिद्धान्त के आधार बनाकर तैयार किया जाता है।
(ii) पाठ्यक्रम में चुनौतीपूर्ण लिंग की विशिष्ट रुचियों तथा आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है, जिससे इनकी शिक्षा तथा समानता में वृद्धि हुई है।

P.T.O

(iii) पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को माना जाता है। इन क्रियाओं के द्वारा बालक-बालिकाओं में अन्तःक्रिया होती है, सहयोग तथा आपसी समझ का विकास होता है।

(iv) पाठ्यक्रम को व्यावहारिक जीवन से सम्बद्ध करने पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है, जिससे भी यह चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता तथा उनकी सशक्त भूमिका के प्रस्तुतीकरण में वृद्धि कर रहा है।

(v) पाठ्यक्रम में चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता हेतु सामग्री का समावेश किया जाता है।

(vi) पाठ्यक्रम में चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता हेतु आपस में मिलकर रहने तथा क्रिया करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जाते हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

(i) लोकतंत्र के लिये बच्चों को तैयार करना।

(ii) बच्चों के पूर्ण विकास के लिये उन्हें प्रेरित करना।

(iii) ऐसे विद्वानों का निर्माण करना जो खोज तथा ज्ञान की सीमाओं का विस्तार कर सके।

(iv) छात्र-छात्राओं में ईमानदारी, निष्कपटता, मित्रता, इच्छा, निर्णय और सहयोग के गुणों का विकास करके नैतिक चरित्र को उन्नत बनाना।

(v) ऐसे वातावरण का निर्माण करना जहाँ बालक विचार करना सीख सके तथा अपने विचार एवं तर्क तथा निरीक्षण शक्तियों का विकास कर सके।

Scanned with CamScanner

Sub. C-6 Gender, School & Society

Topic - Construction of Gender in Curriculum Framework after Independence.

(स्वतंत्रता के पश्चात पाठ्यक्रम निर्माण में जेण्डर की भूमिका)

जैसा कि हम सब जानते हैं कि हमारा देश भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ तथा 26 जनवरी 1950 को हमारा लोकतंत्र की स्थापना हुई यानी संविधान लागू हुआ। लोकतंत्र में सभी को समानता न्याय तथा स्वतंत्रता बिना किसी भेदभाव के मिलती है। भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज सदैव से माना जाता है और शिक्षा में भी पुरुषों की प्रधानता थी, जिससे समाप्त करने का प्रयास किया गया।

पाठ्यक्रम निर्माण के समय बालक-बालिकाओं दोनों हेतु समान रूप से उपयोगी बनाने पर बल दिया गया। पाठ्यक्रम के निर्माण में जेण्डर की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए किसी भी प्रकार से जेण्डर भेदभाव नहीं किया जाता है। यह निम्न तथ्यों से सत्य प्रतीत होता है:-

राधाकृष्णन आयोग (1948-49):-

स्वतंत्रता के पश्चात, राधाकृष्णन आयोग का गठन किया गया, जिसे विश्वविद्यालय आयोग भी कहा जाता है। आयोग ने पाठ्यक्रम को बालक-बालिकाओं दोनों के लिये उपयोगी बनाने हेतु निम्न सुझाव दिये:- (i) स्वतन्त्र चिन्तन

(ii) पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिये

(iii) रचनात्मक विचार के लिये तैयारी

(iv) गृहविज्ञान के अध्ययन की सुविधा

उपरोक्त सुविधायें बालिकाये हेतु माध्यमिक

स्तर पर अवश्य होनी चाहिये।

मुदालियर आयोग (1952-53) :- इसे माध्यमिक शिक्षा आयोग भी कहा जाता है। इस आयोग ने निम्न सुझाव दिये:
(i) पाठ्यक्रम जीवन-केन्द्रित होना चाहिये
(ii) पाठ्यक्रम समुदाय-केन्द्रित होना चाहिये,
(iii) पाठ्यक्रम अनुभव-केन्द्रित विविधतापूर्ण होना चाहिये।
(iv) पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिये।
(v) बालिकाओं हेतु गृह विज्ञान की अनिवार्यता होना चाहिये

कोठारी आयोग (1964-66) :- इसे शिक्षा आयोग भी कहा जाता है। इसमें निम्न सुझाव दिये गये :-
(i) नारियों में शिक्षा में वृद्धि हेतु प्रौढ़ शिक्षा
(ii) व्यावसायिक प्रशिक्षण।
(iii) स्त्री तथा पुरुष की शिक्षा में अन्तर को शीघ्र समाप्त करने का सुझाव दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति :- मई 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई, जो अब तक चल रही है। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली एक ऐसे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचे पर आधारित है जिसमें अन्य लचीले तथा क्षेत्र विशेष के लिये तैयार घटकों के साथ ही एक समान पाठ्यक्रम रखने का प्रावधान है। इसमें-
(i) महिलाओं की शिक्षा में समानता
(ii) लिंग की रूढ़िवादी धारणा को खत्म करने पर बल दिया गया
(iii) व्यावसायिक, तकनीकी सहभागिता पर विशेष बल

इस तरह स्वतंत्रता के बाद पाठ्यक्रम निर्माण में जेण्डर की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

—x—

Scanned with CamScanner

(29) Sub- C-6 Gender School & Society
Topic - Gender and Hidden Curriculum
(जेण्डर तथा छुपा हुआ पाठ्यक्रम)

छुपा पाठ्यक्रम ऐसा भी होता है जो छुपा हुआ होता है, निर्धारित पाठ्यक्रम से अतिरिक्त होता है, जो कहा नहीं जाता है, छुपा हुआ पाठ्यक्रम कहलाता है। ऐसा पाठ्यक्रम जिसे अध्यापक पढ़ाना नहीं चाहते, फिर भी छात्र कक्षा-कक्ष व सामाजिक वातावरण में मूल्यों, विश्वासों तथा नियमों के रूप में ग्रहण करते हैं उसे छुपा हुआ पाठ्यक्रम कहते हैं।

जैसे - लोगों में हमें कैसे व्यवहार करना है, बड़े व सक्षम लोगों से किस प्रकार बात करनी है।

जेण्डर छुपे हुये पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण तत्व है। वह केवल छात्रों हेतु ही नहीं बल्कि विद्यालय से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिये ज्ञान का एक स्रोत है। यह माना जाता है कि शैक्षिक अनुभव किसी भी प्रकार का प्रभाव पैदा कर सकता जैसे - बालिकाओं को नौकरी के साथ-साथ घर-गृहस्थ की जिम्मेवारियों को भी पूर्ण करना है यह एक मनोवृत्ति यह सोच उनकी मानसिक व शारीरिक क्षमता को प्रभावित करती है, जिसके कारण महत्वपूर्ण व अधिक धनोपार्जन जैसे व्यावसायिक विषयों में प्रवेश से वंचित रह जाती छुपा हुआ पाठ्यक्रम जेण्डर असमानता में वृद्धि करता है

छुपा हुआ पाठ्यक्रम जेण्डर भूमिकाओं में नि प्रकार से वृद्धि करता है :—

(1) प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में यह तथ्य प्र से पाया जाता है कि महिला अध्यापक बच्चों की भली-

P.

Scanned with CamScanner

देखभाल कर सकती है, उन्हें अच्छी तरह से समझ सकती है बच्चे जब पढ़े होते हैं तो इसी के साथ बड़े होते हैं।

(ii) विद्यालय की साफ-सफाई तथा समारोह आदि में सजाने के कार्यों के लिये महिला शिक्षकों को अधिक महत्व दिया जाता है।

(iii) उच्चस्तरीय शिक्षण में पुरुषों को अधिक तथा महिलाओं को कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है।

(iv) सामान्यतः कक्षा में यह देखने में आता है कि विज्ञान एवं गणित विषयों के गतिविधियों या प्रयोगों हेतु अध्यापक लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को वरीयता प्रदान करता है जिससे लड़कियों के मन में यह भावना कर जाती है कि वह इन अपेक्षाकृत कठिन विषयों के लिये उपयुक्त नहीं है।

(v) विद्यालय की लड़कियों एवं लड़कों में जेण्डर आधारित तरीकों से सहायता ली जाती है, जैसे लड़के, फर्नीचर आदि को हटाते हैं जबकि लड़कियाँ समारोह आदि में कॉफी, न्याय परोसन का कार्य करती है।

अतः हम उपयुक्त आधार पर यह कह सकते हैं कि छुपा हुआ पाठ्यक्रम विभिन्न प्रकार से लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है जिसका हमें समय रहते निराकरण करना चाहिये।

Sub:- PSS-10 Pedagogy of Science

Topic - Science Education in India
(भारत में विज्ञान की शिक्षा)

भारत में विज्ञान का उद्भव ईसा से 3000 वर्ष पूर्व हुआ है। प्राचीनकाल में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चरक, खगोल विज्ञान में आर्यभट्ट, रसायन विज्ञान में नागार्जुन की खोजों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। इनकी खोजों का प्रयोग आज भी किसी-न-किसी रूप में हो रहा है।

आज विज्ञान का स्वरूप काफी विकसित हो चुका है। पूरी दुनिया में तेजी से वैज्ञानिक खोजे हो रही हैं। इन आधुनिक वैज्ञानिक खोजों की दौड़ में भारत के जगदीश चन्द्र बसु, प्रफुल्ल चन्द्र राय, सी.वी. रमण, मेघनाद साहा, रामानुज, हरगोविन्द खुराना आदि का वनस्पति, भौतिकी, गणित, रसायन, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान है। उदाहरण के लिये :-

जगदीश चन्द्र बोस ने पौधों में जीवन के लक्षणों की खोज के साथ-साथ लघु रेडियो तरंगों का निर्माण किया।

सी.वी. रमण :- इन्होंने प्रकाश किरणों की गुणधर्मिता तथा आकाश की रंगों की व्याख्या पर विशेष शोध किया, जिसके लिये 1930 में नोबेल पुरस्कार मिला।

बीरबल साहनी :- भारत के सर्वश्रेष्ठ वनस्पति वैज्ञानिक थे। इनका अनुसंधान जीवाश्म पौधों पर अधिक है।

डॉ. होमी जहांगीर भाभा :- इन्होंने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की कल्पना की। ये इसके जनक थे।

डॉ. ए. पी. जे. कलाम :- भारत के मिसाइल मैन कहा जाता है

P.T.O.

Scanned with CamScanner

इन्होंने 1998 में भारत के पोखरन द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई। इन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया है। इन्होंने अग्नि तथा पृथ्वी जैसे प्रक्षेपास्त्रों को स्वदेशी तकनीक से बनाया था।

भारत ने परमाणु ऊर्जा तथा इलेक्ट्रोनिकी के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की है।

कुछ प्रमुख संस्थान :-

भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (IISER) :- यह संस्थान कलकत्ता, पुणे, मोहाली, भोपाल तथा तिरुवनंतपुरम में स्थित है। इसकी स्थापना भारत में विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिये की गई है।

भारतीय विज्ञान संस्थान :- यह उच्च शिक्षा के लिये अग्रणी शिक्षा संस्थान है। यह बंगलुरु में स्थित है। इसकी स्थापना 27 मई 1909 को जमशेदजी नसरवान जी टाटा द्वारा हुआ। इस संस्थान के प्रमुख विद्यार्थी - होमी भाभा, सीवी रमन, विक्रम साराभाई, एम. विश्वेश्वरैया, ए.पी.जे कलाम आदि।

होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र (1974) - विज्ञान व गणित की शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना इस केन्द्र का प्रमुख ध्येय है।

गणित विज्ञान संस्थान (1962) - चेन्नई में। गणित, भौतिकी आदि

टाटा मूलभूत संस्थान (1945) - मुम्बई में। यहाँ मुख्यतः प्राकृतिक विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान में अनुसंधान कार्य किया जा रहा है।

विज्ञान की दुनिया में भारत की 5 उपलब्धियाँ :-

(i) मंगलयान का मंगल ग्रह में पहुँच जाना - 2014 में पहले ही प्रयास में।
(ii) GSLV मार्क-2 का सफल प्रक्षेपण।
(iii) GSLV मार्क-3 का सफल प्रक्षेपण।
(iv) परमाणु क्षेत्र में उपलब्धि
(v) व्हीट जीनोम सीक्वेंस (जेनेटिक) किया।